Estd. Year 1987

चबूतरा

2022-2023

राजकीय महाविद्यालय

महम (रोहतक)

Ph. 01257-233011

E-mail : gcmeham@gmail.com

Website : www. gcmeham.ac.in

Teaching Staff

Message from the Principal

Dear College Students

As we embark on a new academic year, I want to extend a warm welcome to each and every one of you. It is with great enthusiasm and optimism that I address you today as the principal of our esteemed college. Whether you are a returning student or just beginning your college journey, I am excited to be part of this transformative period in your lives. College is a time of discovery, growth, and endless possibilities. It is a time to challenge yourself, broaden your horizons, and embrace new opportunities. Within these walls, you will encounter a diverse community of students, faculty, and staff who are all dedicated to your success. We are here to support and guide you in your academic pursuits, personal development, and preparation for the future. At our college, we believe in fostering a vibrant learning environment that encourages creativity, critical thinking, and collaboration. Our faculty members are renowned experts in their fields, and they are committed to providing you with a world-class education. They will challenge you to think critically, explore new ideas, and push the boundaries of your knowledge. Beyond the classroom, our college offers a wide range of extracurricular activities and student

organizations to enrich your college experience. These opportunities will allow you to develop leadership skills, pursue your passions, and create lasting friendships. I encourage you to get involved, seize every chance to expand your horizons, and make the most of your time here. However, I also want to emphasize the importance of balance during your college years. As you immerse yourself in your studies and extracurricular activities, remember to prioritize your well-being. Take time to rest, recharge, and maintain a healthy lifestyle. Seek support from our dedicated counseling services if you ever feel overwhelmed or face any challenges along the way. Remember, you are not alone on this journey, and we are here to help you thrive. College is a transformative experience that will shape your future. It is a time to explore your passions, discover your strengths, and chart your path towards success. Embrace the opportunities before you, be open to new experiences, and have the courage to take risks. Remember that success is not measured solely by grades or achievements but by the lessons learned, the relationships forged, and the personal growth you undergo. As your principal, I am committed to your success and well-being. My door is always open, and I welcome your ideas, concerns, and aspirations. Together, let us create a dynamic and inclusive college community where each and every one of you can thrive. I wish you all a memorable and fulfilling academic year. May your college journey be one of growth, self-discovery, and extraordinary achievements.

Dr. Santosh Hooda
HES-I
Principal

TRAFFIC RULES
(FOR PEDESTRIANS)

राजकीय महाविद्यालय महम
One Day NSS Camp
Not Me
But You
GOVT. COLLEGE, MEHAM

Tuesday 18th October 2022
From : 10 AM to 2 PM

From Editor Desk

A college magazine is a mirror of the college life. It reflects the literary, educational and sports activities going on in the college. It projects the important events celebrated in the college during a certain month or year. So here you have "**CHABUTRA**", the long awaited magazine of **Govt. College, Meham** for the year **2022-2023**.

The young writers and poets get an excellent opportunity for displaying their talent. Essay's, short stories, poems, informative articles are written by students and are published in the magazine. This cultivates a find literary taste among the students. In this way the college magazine helps boost new talent. The young budding authors and poets are encouraged a lot when their works are published in the magazine. Obviously, it is a rare pleasure to see one's work in print in the college magazine.

"**CHABUTRA**" presents the hard work and dedication of students and contributions of teachers. I would like to thank all my editorial team members for helping me pull this through. I express my considerable appreciation to all the authors of the articles in this magazine. These contributions have required a generous amount of time and effort. It is this willingness to share knowledge, concerns and special insights with fellow beings that has made this magazine possible.

It's your dedication "Ms Jyoti Sharma" that contributed to our success. Thank you for inspiring us!

Smt. Pinki Rani
Chief Editor

सम्पादक मण्डल

संरक्षक

डॉ० सन्तोष हुड्डा

प्राचार्या

मुख्य सम्पादिका

श्रीमती पिंकी रानी

सहायक प्राध्यापिका

हिन्दी विभाग

प्राध्यापक सम्पादिका
श्रीमती पिंकी रानी

छात्र सम्पादक
मोहित B.A. III, 120130002124

अंग्रेजी विभाग

प्राध्यापक सम्पादिका
श्रीमती अंजु रानी

छात्र सम्पादक
रवि B.A. I, 1221301002595

वाणिज्य विभाग

प्राध्यापक सम्पादिका
श्रीमती सुनील कुमारी

छात्र सम्पादिका
पूजा B.Com. III, 120130003030

सांईस विभाग

प्राध्यापक सम्पादिका
श्रीमती मनीषा हुड्डा
HOD Chemistry

छात्र सम्पादिका
सोनिया B.Sc. II, 1211301015005

संस्कृत विभाग

प्राध्यापक सम्पादिका
श्रीमती ममता

छात्र सम्पादक
विनोद B.A. III, 12130002388

अर्थशास्त्र विभाग

प्राध्यापक सम्पादिका
श्रीमती ज्योति शर्मा

छात्रा सम्पादिका
भावना B.A. II, 1211301002035

संपादकीय.....

पिंकी रानी
संपादिका, हिन्दी विभागाध्यक्ष
राजकीय महाविद्यालय, महम

प्रिय विद्यार्थियों,

वर्तमान सत्र की पत्रिका 'चबूतरा' का अंक आपके हाथ में है। महाविद्यालय स्तर पर चबूतरा पत्रिका अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। युवा–वर्ग वर्तमान भारत का निर्माता है। इसलिए इस युवा शक्ति की विचारधारा का सशक्त एवं समाजोपयोगी होना बहुत आवश्यक है। समाज एवं समस्याएँ एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। समाज होगा तो व्यक्ति एवं समस्याएं भी रहेंगी। क्या सिर्फ समस्याओं का मूक दर्शक की तरह अवलोकन करना न्याय संगत होगा ? समाज को आदर्श की ओर ले जाना है तो प्रत्येक व्यक्ति का योगदान महत्वपूर्ण है। एक अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता पर उस अकेले चने के योगदान को नकारा भी नहीं जा सकता।

प्रिय विद्यार्थियों समय की मांग को देखते हुए आपको भी अपनी विचारधारा के साथ एक परिपक्व इन्सान की तरह स्वस्थ–समाज की कल्पना को साकार करना होगा। रास्ता कठिन तो है, पर अप्राप्य नहीं। आपको भी शिक्षा के साथ समाज के प्रति अपने दायित्व को समझना होगा। हर प्रयास सफलता की ओर जाए यह सम्भव नहीं। मनुष्य को निरन्तर संघर्ष करते रहना चाहिए।

शिक्षा और समाज का संबंध

पिंकी रानी
संपादिका, हिन्दी विभागाध्यक्ष
राजकीय महाविद्यालय, महम

एक लंबे अरसे से हम सब यह कहते, सुनते, लिखते आ रहे हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। यह सच भी प्रतीत होता है लेकिन विचारणीय मुद्दा है कि आखिर मनुष्य को इस गहराई का ज्ञान कब और कैसे हुआ कि उसे एक सामाजिक ताना–बाना दिया गया है। जिसमें उसको (हब सबको) जीना है और उत्तरोत्तर उसे बेहतर करते जाना है ताकि और भी ढंग से जी सके। इस संवेदनशीलता और गहराई का एहसास हमें शिक्षा करवाती है इसलिए जब भी किसी व्यक्ति, परिवार राष्ट्र का उत्थान या पतन होता है तो हम पाते हैं कि शिक्षा का न होना या गलत ढंग से शिक्षा का होना दोनों की पतन का कारण बनते हैं। शिक्षा से यहां मेरा आशय केवल नौकरी पाने से नहीं है अपितु शिक्षा का अर्थ है एक मनुष्य स्त्री व पुरूष का सर्वांगीण विकास होना।

मनुष्य के प्रारंभिक युग से लेकर आज उत्तर आधुनिक युग तक समाज और शिक्षा का स्वरूप, महत्व और परिभाषाएं समय के साथ बदलती रहती हैं। इसके पक्ष एवं विपक्ष दोनों स्तरों पर सकारात्मक बहस की भी पूरी गुंजाइश है। लेकिन एक सार्वभौमिक सत्य ये है कि जो शिक्षा आज दी जा रही है उससे आपका स्वयं के व्यक्तित्व का कितना सुधार हुआ और उस सुधार का दायरा बढ़ाकर हमने समाज को

क्या दिया क्योंकि कोई भी इस तथ्य से इन्कार नहीं कर सकता कि हमने समाज से लिया बहुत कुछ है।

इसलिए जब समाज को देने की बारी आती है तो शिक्षा ही एकमात्र जरिया है जिससे मनुष्य के भीतर वर्षों से दबी कुंठाओ, अतृप्त इच्छाओं, दमन, स्वार्थ और ईर्ष्या को खत्म किया जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि हम दूसरों को भी एक इंसान समझे तथा जो विचार हमें पसंद नहीं है उसकी भी इज्जत करना सीखे। जिस समाज का जैसा ढांचा होता है वैसा ही स्वरूप शिक्षा का बनने लगता है। हम विदेशी समाज और शिक्षा तथा भारतीय शिक्षा और समाज का अंतर आसानी से महसूस कर सकते हैं। इसलिए सही और गलत भी हर समाज का अपना–अपना होता है। जैसी शिक्षा हम पाते हैं वैसा ही समाज बनता जाता है। यहां यह भी विचारणीय है कि हमारे संस्कार, परिवेश और माहौल भी बदलती शिक्षा और समाज के साथ गहराई से जुड़ा होता है। कौन समाज उसको कितना अपने भीतर समाहित कर पाता है वह उसी अनुपात में अपने को शिक्षित कर लेता है। वास्तक में शिक्षा का अर्थ है एक विनम्र संवेदनशील समाज और दूसरों के प्रति अपना दायित्व समझना। अपनी कमजोरियां, विफलताओं और कुंठाओं को स्वीकार करके निरंतर सुधार करना। अगर हम शिक्षित होकर किसी दूसरे को कुछ नहीं दे पाते तो मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि हमारे पास डिग्रियां हैं। जिसके बदले हमने नौकरी पा ली, बच्चों को पाठ्यक्रम पूरा करवाया तो बदले में वेतन पा लिया। परंतु इसका यह अर्थ नहीं कि हम एक शिक्षित सभ्य इंसान हैं। इसलिए अक्सर हम सुनते हैं समाज का नैतिक पतन हो रहा है

लेकिन साक्षरता दर बढ़ रही है। उसका कारण यही है कि शिक्षा ने हमें एक बेहतर इंसान नहीं बनाया तो बेहतर समाज कैसे बनेगा। पढ़ा लिखा आदमी या बच्चा आत्महत्या कर ले या वह दूसरे की हत्या कर दे इन दोनों में कोई बहुत ज्यादा फर्क नहीं है क्योंकि एक में इंसान खुद को मारता है दूसरे में समाज इंसान को मार देता है। हमें सीखना होगा कि इसके लिए यह जरूरी हो जाता है कि शिक्षा ऐसी हो जो अंदर से हमारी सामाजिक उलझनों को खोलें और जब एक सुलझा हुआ आदमी समाज में प्रवेश करता है तो वह एक सकारात्मक अर्थों में एक अच्छे समाज का निर्माण करेगा। जिसमें सब का सब तरह से योगदान होगा। मेरे अनुसार शिक्षा और समाज का अच्छा यही संबंध है इसमें जो कुछ भी कमिया रह गई है वो मेरी व्यक्तिगत हैं और जो कुछ अच्छा लिख बन पड़ा है उसका श्रेय आप सब को है।

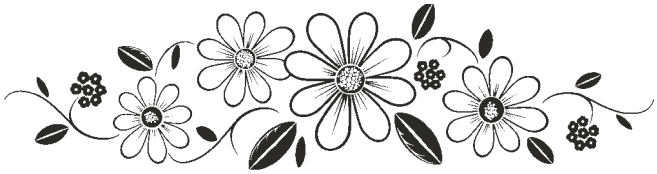

औरतें

श्रीमती ज्योति शर्मा
विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र

लोग सच कहते हैं
औरतें अजीब होती हैं
रात भर सोती नहीं पूरा
थोड़ा थोड़ा जागती रहती
नींद की स्याही में
उंगलियां डुबो
दिन की वही लिखतीं
टटोलती रहतीं
दरवाजों की कुंडियां
बच्चों की चादर
पति का मन
और जब जागती सुबह
तो पूरा नहीं भगतीं
हवा की तरह घूमतीं
घर बाहर
टिफिन में रोज रखतीं
नई कविताएं
गमलों में रोज वो देतीं
आशाएं
पुराने पुराने अजीब से गाने
गुनगुनातीं
और चल देतीं फिर
एक नये दिन के मुकाबिल
पहन कर फिर वही सीमाएं

खुद से दूर हो कर ही
सब के करीब होतीं हैं
कभी कोई ख्वाब पूरा नहीं देखतीं
बीच में ही छोड़ कर
देखने लगतीं हैं
चूल्हे पे चढ़ा दूध
कभी कोई काम पूरा नहीं करतीं
बीच में हीं छोड़ कर
ढूंढने लगतीं हैं
बच्चों के मोजे पेन्सिल किताब
सूखे मौसम में बारिशों को
याद करके रोती हैं
उम्रभर हथेलियोंमें
तितलियां संजोती हैं
और जब एक दिन
बूंदें सचमुच ही बरसा जाती हैं
हवाएं सचमुच गुनगुनाती हैं
तो ये सूखे कपड़ों, अचार, पापड़
बच्चों और सब दुनिया को
भीगने से बचाने को
दौड़ जाती हैं
खुशी के एक आश्वासन पर
पूरा पूरा जीवन काट देतीं
अनगिनित खाइयों पर

जीवन में अच्छे और बुरे लोगों की परख

डॉ. बबीता तंवर
हिन्दी विभाग

अक्सर हम कई बार ऐसे लोगों के बीच आ जाते है जहां हम अच्छे और बुरे लोगों में फर्क नहीं समझ पाते है। यह जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना है। ऐसे में कुछ बुरे लोग हमें भी अपने जैसा बनाने की कोशिश में रहते है और ऐसा करके उन्हें काफी आनन्द भी मिलता है। ऐसे लोग ना तो खुद आगे बढ़ते है और ना किसी को आगे बढ़ने देते है। अब अच्छे लोगों की क्या खासीयत होती है वो जान लेते है। अच्छे लोग आपको आगे बढ़ने की सलाह देने के साथ–साथ आपकी प्रेरणा के स्त्रोत्र भी बनते है। कई लोग अपने जीवन स्तर में काफी सुधार कर चुके होते है क्योंकि उनके साथ कुछ गतिविधियां थी जो उन्हे कुछ अच्छे लोगों से सीखने को मिली। अपने साधनों का सही उपयोग कहां और कैसे करना है ये वो भलीभांति समझ सकते है।

अक्सर कई लोग उन लोगों की बीच बैठना पसंद करते है जो सिर्फ उनकी झूठी तारीफ करते है। लेकिन आप बस एक बार उनसे अपने लिए मदद की उम्मीद करके देखिएगा। आप खुद समझ जायेंगे की वो हमारे हितेषी है या नहीं। नींम कड़वा जरूर होता है पर ज्यादातर बिमारियों में नीम हकीम है। कुछ लोग नीम की तरह है। लेकिन वो ही आपके सच्चे हितेषी भी होते है। ऐसे लोगों से हमेशा आपको फायदा ही मिलता है। क्योंकि उनको जब आपकी बुराई करनी होती है तो वो आपके पीठ पीछे नहीं बोलेगें। बल्कि वो आपके सामने ही आपकी बुराई कर देंगे। उनकी बातें बिलकुल खरी होती है।

अब मैं बुरे लोगों की बात करूँ तो वो नकारात्मक पहलुओं को तुरंत पकड़ते है और जब हम उनके साथ रहना शुरू करते है तो हमारे अन्दर भी वो ही नकारात्मक भाव पनपने लगते है। हमारी सोच भी उन्ही के जैसी होने लगती है। क्योंकि एक दूसरे में घुलने–मिलने के लिए हमें भी उनके जैसा ही बनना पड़ जाता है। ये मानव की प्रकृति है कि वो नकारात्मकता की और जल्दी ही आकर्षित हो जाता है। जिसका प्रभाव उन्हें तब दिखाई पड़ता है जब कोई उनकी आशाओं को रोंधकर उनसे आगे निकल जाता है। कई बार तो इतनी देर हो चुकी होती है कि मुकाम हाथ से पूरी तरह निकल जाता है। जो लोग मीठा बोलते है आपको उनसे सतर्क रहने की जरूरत है। हो सकता है कि वो आपके हितेषी ना हो। मैं ये नहीं कहती कि सभी लोग एक जैसे ही होते है। कुछ लोग आपकी परवाह करने वाले भी होंगे। इसी उम्मीद के साथ की आपको मेरे इस प्रेरणादायक लेख से कुछ सीखने को मिला।

Different Perspectives of Educational Reforms

Mrs. Manju
Extension Lecturer
Govt. College, Meham

We have to be aware of changes can lead to both positive and negative outcomes.The word “reform” doesn't always lead to a good Educational Reforms.One of educational reforms is about the use of technology in the classroom. It is not a surprise that many people prefer on using their laptops in the classroom because we are living in the age of technology. To explain, technology such as phone or laptop play a vital role in our life so, we think that being able to use technology in the classroom helps to develop essential skills that need for the 21st century. This is just one aspect when we look at the terms of educational reform, a positive side. So, the word “reform” is being used and it gives positive vibes toward the concept of using technology in the classroom.

On the other side, it has been found that students are often get distracted by technology. According to Susan Dynarski, a professor of education, public policy and economics at the University of Michigan, in the New York Times “College students

learn less when they use computers or tablets during lectures, they also tend to earn worse grades. The research is unequivocal: Laptop distract from learning, both for user and for those around them." (Dynarski) So, it is risky for an educational plateform if they get influenced by the word "reform" and allow using the technology in the classroom without considering the negative effects of it.

Emergence of Digital Learning in India

Dr. Sunil Kumari
Assistant Professor
Govt. College, Meham

Education is inevitable thing which changes the world into something better. Everyone in this globe wants a good education to develop in them a perspective of looking at life. There are innumerable ways to get education and bring it in the learning process like physical presence (attending class in School/College/Institute) and online learning (remote). Majority of the students prefer physical presence in the classroom but this COVID-19 outbreak entrapped the whole world and compelled students to go through online mode of learning. But due to the less availability online facilities, students have not been able to grasp knowledge properly. The online journey of learning has been of different perception to different community. The students of rural community have different opinion whereas the students of urban community have different perception. India, like many developing countries across the globe, is badly equipped to deal with what's to come. Having understood the insufficiency

of digital faculty and in light of the many challenges being reported by parents and students across the country, the Ministry of Human Resources and Development launched a “Bharat Padhe Online” campaign on April 12, 2020 for crowd sourcing of ideas to improve the online education flora and fauna of India. However, it remains unclear. Further, there is no significant association in the perception of students in rural, urban and metropolitan location about problem in digital learning in lock down period. Overall it can be concluded that more problems are being faced by rural area students in using digital media as a tool of learning as compared to the urban area and metropolitan area students. So, efforts should be made to enhance the efficacy of digital media as a tool of learning by providing practical exposure to the students with regard to this media.

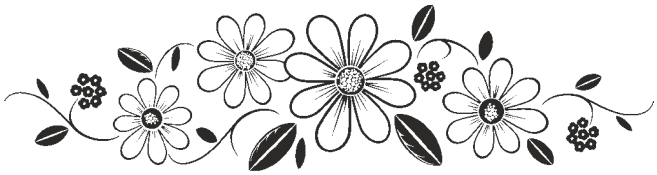

THE POWER OF WORDS

Dr. Varsha Rani
Assistant Professor
Department of Psychology

Words can be so powerful. If you are conscious of what you are saying you might notice your words effects on others. The research of Dr. Emoto showed that water has memory and effects on things, for instance plants, trees and above all humans.

Dr. Masuru Emoto, a Japanese scientist and water researches has revealed that thoughts and vibrations effect the molecular structure of water. After studying water for many years through high speed photography of water crystals and by the use of MRA, a vibration measuring device to record emotional vibrations in humans, Dr. Emoto observed that water reacts to the sound vibrations.

The water crystals formed beautiful geometric shapes when words of love and gratitude were spoken near the water. But when evil words were uttered near another sample of water taken from the same source the crystals smashed, and turned into destructed shapes. Thus, It can have a strong impact on human consciousness, since a human body contains 70% water. So the words we hear have impressions on our heart and mind because the water inside reacts accordingly. Dr. Emoto's research provides enough evidence that the person complaining of someone's bad attitude is hurt and is reacting for a reason.

It is important to know how we can make someone's day or rain it with more use of words, at time without even realizing it.

I OPENED A BOOK

Mrs. Manisha Hooda
HOD Chemistry

I opened a book and in I strode.
Now nobody can find me.
I've left my chair, my house, my road,
My town and my world behind me.

I'm wearing the cloak, I've slipped on the ring,
I've swallowed the magic potion.
I've fought with a dragon, dined with a king
And dived in a bottomless ocean.

I opened a book and made some friends.
I shared their tears and laughter
And followed their road with its bumps and bends
To the happily ever after.

I finished my book and out I came.
The cloak can no longer hide me.
My chair and my house are just the same,
But I have a book inside me.

गुरूमहिमा

विनोद
स्नात्तक तृतीय वर्ष
अनुक्रमांक 120130002388
छात्र सम्पादक, संस्कृत विभाग

धर्मज्ञो धर्मकती च सदा धर्मपरायणः।
तन्वेश्यः सर्पशास्त्रार्थादेशको गुरूरूच्चयते।।

नीचं शव्यासनं चास्य सर्वदा गुरूसंनिधौ।
गुरोस्तु चक्षुर्विषये न यथेष्टासनो भवेत्।।

शरीरं चैव बचं च बुद्धिन्द्रिय मनांसि च।
निमम्य प्राञ्जलिः तिष्ठेत् वीक्षमाणो गुरौर्मुखम्।।

किमत्र बहुनोक्तेन शास्त्रकोटि शतेन च।
दुर्लभा चित्त विश्रान्तिः विना गुरूकृपां परं।।

गुकारस्त्वन्धकारस्तु रूकार स्तेज उच्च्ते।
अन्धकार निरोधन्वत् गुरूरिन्यभिधीयते।।

शरीरं चैव वाचं च बुद्धिन्द्रिय मनांसि च।
नियम्य प्राञ्जलिः तिष्ठेत् वीक्षमाणो गुरोमुखम्।।

प्रेरक सूचकश्रैप वाचको दर्शकस्तथा।
शिक्षकौ बोधकश्रैव षडेते गुरवः स्मृताः।।

ठोकर खाना जरूरी है

मोहित
बी.ए. तृतीय वर्ष
रोल नं० 120130002124
छात्र सम्पादक

एक समय की बात है, जब राजू अपने माता–पिता के साथ शहर में रहता था। उसके माता–पिता दोनों ही सरकारी नौकरी करते थे। पिता वैज्ञानिक थे तथा माता पुलिस कांस्टेबल में नियुक्त थी। इसलिए वो दोनों ही राजू को अधिक समय नहीं दे पाते थे। ज्यादातर समय राजू अकेले ही घर में बिताता था। कभी वह टेलीविजन देखता, तो कभी पढ़ने बैठ जाता था। उसके माता–पिता का सपना था कि वह उनसे भी ज्यादा बड़ा आदमी बने। इसलिए वो उसे वकील बनाना चाहते थे। समय बितने के साथ–साथ राजू भी बड़ा हो रहा था।

अब राजू 18 वर्ष का हो गया था तथा वह किशोरावस्था की मध्य स्थिति तक पहुँच गया था। किशोर होने के गुण उसके अंदर साफ–साफ नजर आ रहे थे। इसलिए वो थोड़ा चिड़चिड़ा हो गया था। ऐसे समय में उसके माता–पिता को राजू का पूरा साथ देना चाहिए। परंतु सरकारी नौकरी होने के कारण, वे उसे समय नहीं दे पाते थे। राजू शुरू से ही पढ़ने में होशियार था। नौवीं कक्षा तक की शिक्षा में वह हर बार प्रथम, द्वितीय और तृतीय श्रेणी से पास होता था। अब वह दसवीं कक्षा में पहुँच गया, जो बोर्ड की कक्षा थी। अब राजू परीक्षा को लेकर चिंतित था। जिससे उसके स्वभाव में बदलाव आ गया। और वह जल्दी से गुस्सा होने लगा। उसके माता–पिता भी उसके ऊपर अधिक प्रेशर (दबाव) डालने लगे। ताकि वह अच्छे अंकों से पास हो सके।

अब राजू का मानसिक तनाव बढ़ता गया। तथा वह प्रतिदिन कमजोर होता गया। तथा पढ़ने में भी वह अपने–आपको कमजोर महसूस करने लगा। धीरे–धीरे परीक्षा के दिन नजदीक आ रहे थे तथा राजू की समस्याएँ और बढ़ती जा रही थी। तथा परिवार वाले उससे अत्यधिक आशा लगाए हुए थे। कि इस बार भी राजू टॉप

करेगा।

दूसरी तरफ श्याम नाम का एक लड़का ओर था, जो राजू का दोस्त बनकर रहता था। परंतु मन ही मन वह उससे नफरत भी करता था। क्योंकि राजू उससे होशियार था। इसलिए वह राजू को सच्चा मित्र बनने का ढोंग करता था। श्याम को राजू की मनोदशा पता थी लेकिन उसने यह बात किसी को नहीं बताई। तथा राजू मन ही मन घुटता रहा।

अब राजू की परीक्षा आ गई थी। राजू के प्रथम पाँच पेपर बहुत अच्छे हो गए तो राजू बहुत खुश हो पाया इसलिए राजू उदास भी था। तथा उसे इस बात का भय भी था कि कहीं वह अंग्रेजी विषय में अनुतीर्ण न हो जाए। राजू बार–बार प्रश्न–पत्रों को उठाता तथा पुस्तकों से उनके उत्तर ढूंढकर अपने आप ही यह अनुमान लगाता की शायद उके अंक इतने तो आ ही जाएंगे। अब परीक्षा परिणाम की घोषणा होने ही वाली थी और राजू के हृदय की गति तेजी से बढ़ रही थी। परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ और वह अंग्रेजी विषय में पास न हो सका। जिसका सभी परिवारजनों को सदमा लगा। तथा राजू के माता–पिता ने राजू को बहुत अधिक डाँट दिया। जिससे राजू गुस्से में भरकर तथा उदास होकर अपने कमरे में चला गया। रात–भर उससे कोई भी बात करने नहीं आया वह भूखा–प्यासा यूँ ही ऊपर सो गया। राजू के पिता, उससे बहुत नाराज थे। परंतु माँ का गुस्सा शांत होने पर वह उसके लिए खाना लेकर ऊपर गई वह बोली–

''बेटा राजू खाना खा ले, जो हुआ सो हुआ'' परंतु राजू ने खाना–खाने से मना कर दिया और बोला–

''माँ मुझे भूख नहीं है, मैंने कमरे में रखे बिस्कुट खा लिए है।''

उसकी माँ यह सुनकर वापिस आ गई। तथा अगली सुबह जब राजू अपने कमरे से नीचे उतरकर आया तो उसके पापा कह रहे थे कि ''हमें राजू को हॉस्टल में छोड़ देना चाहिए जहाँ उसका ध्यान केवल पढ़ाई में ही रहेगा।

राजू को दुख तो हुआ किंतु वह हॉस्टल जाने के लिए तैयार हो गया। और वह देर घर से बाहर चला गया। जहां उसे देखकर उसके साथी मजाक उड़ाने लगे तथा

कहने लगे ''हम इस फेलियर के साथ नहीं खेलेगें, चलो कही ओर जाकर खेलते हैं।''

आस–पड़ोस के लोग भी उसे थोड़ी हीन दृष्टि से देखते हुए तथा उससे पूछते हुए कते

''हर बार टॉपर आने वाला, इस बार पता नहीं कैसे फेल हो गया। शायक नकल करता होगा''

इस तरह लोगों के ताने सुनता हुआ राजू रोते–रोते अपने घर चला आया। पापा और मम्मी ने नौकरी पर चले जाने के कारण उसे दिलासा देने वाला कोई नहीं था। वह बिल्कुल अकेला पड़ गया था। जिसके कारण वह गहरी मानसिकता (डिपरेशन) का शिकार हो गया। अब उसे लगने लगा कि उसका जीवन निरर्थक है। वह अब जीवन में कुछ नहीं कर सकता। वह इस धरती पर बोझ है। उसने अपने माता–पिता को बहुत ठेस पहुँचाई है। जिसके कारण उसके माता–पिता कहीं मुँह दिखाने के लायक नहीं रहे। किशोरावस्था के समय, इस गहन सोच में डूबे , उस नादान राजू ने एक ऐसा फैसला ले लिया। जो उसकी जिंदगी का पहला और आखिरी फैसला बन गया। तथा उस फैसले के लिए उसने अंतिम बार पत्र लिखा जिसमें उसने, अपने साथ बिती हर बात को लिखा और अपने पंखे के साथ रस्सी बाँधकर उसस पर लटक गया तथा आत्महत्या कर ली।

इसलिए जिंदगी में असफलता आवश्यक है परंतु इस असफलता में घर वालों के सहयोग की अत्यधिक आवश्यकता होती है। तथा किशोरावस्था एक ऐसी आयु होती है जो किशोर की बुद्धि को क्षीण कर देती है। इसलिए माता–पिता को बच्चे के हर क्षण और हर फैसले में सामंजस्य स्थापित करना चाहिए। तथा बच्चे का सहयोग करना चाहिए। इसलिए कहा है–

''जल्दबाजी में लिया गया फैसला अकसर हमारी जिंदगी पर भारी पड़ता है''

SAVE A GIRL CHILD

POOJA
B.Com. 3rd Year
Roll No. 120130003030
Editor, Commerce Department

As we know, a girl child is a blessing. She plays many roles in her life. But there are many societies in India where gender discrimination, still exists to this date. Girls were dolled up for their wedding at very delicate age and boys were sent to school to make their future. And then these boys wants an educated wife. From where those girls will come? Females are not e-mails, don't delete them. Because when you save a girl child, you save a girl child, you save a generation.

A girl plays a very important role in men's life. When he takes birth, a women is there to show him right path, his mother. As her grew up a women is there to play with him, his sister. As he is married a women is there to support him, his wife. As the becomes a father, a women is there who loves him, his daughter. And as he dies, a women is there to accept him, his motherland. A men needs a women at every stage of his life but still she is not given equal rights.

"Give girls the wings to fly, not the pain to cry and die."

I request everyone to feel proud if you are a brother of a sister, father of a daughter, husband of your wife and a son of your mother because she will always help you in every condition of your life. As it is said.

"A son is a son til he takes him a wife and daughter is a daughter all her life."

" A girl child brings joy,

She is no less than a boy."

India is a country where on one hand everybody with devotion in their hearts workshop goddesses and on another, hand, various crimes are committed against a girl child like female feticide, child marriage, rape and the list goes on. The security of women and girl child is a series of questions which doesn't step towards a new India where a girl child is protected. She should be loved and cared for by the people around her. We can empower her only by celebrating, protecting and educating a girl child.

"Don't be cold.

Girls are worth more than gold !"

A girl should not be killed, hated on disrespected. She should be saved loved and respected for the better ment of society and country. She is as equal participant in the development of country as boy.

" Save girl child" should not just be slogan of the government but the entire nation. Let us create such an environment where women can move around the country freely and fearlessly.

"Daughter is not a Tension.

She is equal to Ten + son."

"Girls are great, Don't destroy their fate.

बचपन

सोनिया
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
रोल नं० 1211301015005
छात्रा सम्पादिका, साईंस विभाग

वो बचपन आज याद आता है
वो स्कूल ना जाने का बहाना
और जाने पर घंटो आंसू बहाना
वो पेंसिल का खो जाना
और दूसरों की रबड़ चुराना
आज याद आता है.....

वो जा सी बात पर झगड़ना
और गलतियों पर ''बेलन'' पड़ना
वो धूप में साईकिल चलाना
और घर आकर बीमार पड़ जाना
आज याद आता है.....

वो ''शक्तिमान'' के लिए भाई से लड़ना
और खींचतान में रिमोट का टूटना
वो ''झिलमिल'' की किताबें लाना
स्कूल छोड़ कॉमिक्स में ही लग जाना
आज याद आता है.....

वो पैसे चुराकर विडियो गेम लाना
बड़ी सी टी.वी. पर ''मारिओ'' कूदना
वो दोस्तो संग मेला जाना
और कुल्हड़ की बर्फ को खाना
आज याद आता है.....

कविता

भावना
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल नं० 1211301002035
छात्रा सम्पादिका, अर्थशास्त्र

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरूर्साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

कोई शिल्पकार मानो
पत्थर को देता आकार,
कोई कच्ची मिट्टी तपाकर
मिटाता हो विकार।

भाग्य विधाता कहूं तुम्हें
या भाग्य रचयिता,
ज्ञान का अविरल स्त्रोत....
जिसमें हो बहाता।

जो निःस्वार्थ पथ दिखलाता
किसी को बनाने में
जो स्वयं मिट जाता।

वो ऐसा ज्ञान का भंडार है
जिस पर हर निष्ठावान....
का अधिकार है।

जहां गुरू रूप प्रकाश
विद्यमान हो,
वहां कैसे फिर
अज्ञानता का अंधकार हो।

ब्रह्मा, विष्णु महेश
का प्रारूप है.....
वह गुरू धरती पर
हमें देव स्वरूप है।

THE SNOWFLAKE

Student Editor
RAVI
B.A. 1st Year
Roll No. 1221301002595

It was a little snowflake
with tiny winglets furled;
Its warm cloud mother held it fast
Above the sleeping world.
All Night the wild winds blustered
And blew o'er land and sea ;
But the little snowflake cuddled close,
As safe as safe could be.

Then came the cold gray morning,
And the great cloud mother said;
"Now every little snowflake
Must proudly lift its head,
And through the air go sailing
Till it finds a place to alight,
For I must weave a coverlet.
To clothe the world in white"

The little snowflake fluttered.
And gave a wee, wee sigh ;
But fifty million other flakes.
Come softly floating by;
And the wise cloud mothers sent them
To keep the world's bread warm
Through many a winter sunset,
And many a light of storm.

संस्कृत विभाग

दिवाकर
बी.ए. तृतीय वर्ष
रोल नं० 120130002058

।। श्री मङ्गलमूर्तये नमः ।।

तत्काकतीर्थं स्वयमेव जातं
आरामकार्यं करणीयमस्ति।
तथैव दोषाः स्वयमेव प्राप्ताः
गुणप्रकर्षे हि महान् श्रमोऽस्ति।।

या देवभाषा जगति प्रसिद्धा संस्कारयुक्ता हि गुणप्रकर्षा।
या संस्कृतिं भूषयति त्रिकाले वन्दामहे तां सुरभारती नः।।
महाविद्यालस्य चबूतरा पत्रिकायाः इदं संस्कृत खण्डं
सहृदयेभ्यः सुधीभ्यः पाठकेभ्यः छात्रेभ्यश्य हस्तेषु समर्पयन् अहम्
अमन्दम् आमोदं अनुभवामि। पत्रिका चेय छात्रेभ्यः स्वमनोभावान्
विचारांश्य प्रकटयितुं अवसरं प्रदाय तेषां बुद्धेः व्यायामं कारयति।

न वेति यो देवगिरां प्रवाहं नास्वादितं येन सुभाषितञ्य।
कृतां न कस्यापि कदापि सेवा मनुष्यरूपेण ततः कृतं किम्।।
आकाशे हि यथा सूर्यश्चन्दनं विपिने यथा।
सरोवरे यथा पध्नं भाषसु संस्कृतं तथा।।

महम चौबीसी का चबूतरा

पायल
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल नं० 1211301015033

1857 की क्रांति में अंग्रेजी सेना के साथ आजादी की लड़ाई लड़ते हुए चौबीसी के योद्धाओं की याद में बनाया गया। चौबीसी का चबूतरा प्रदेश की ऐतिहासिक धरोहरों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहाँ के दौलत राम को अंग्रेजों ने फाी दी थी। मदीना, महम, मोखरा आदि इस खाप के प्रमुख गाँव हैं। यह चबूतरा हरियाणा के रोहतक जिले में है। यह वही खाप है जिसने कलानौर के जालिम नवाब को समूल उखाड़ फेंका था और आज भी राजनेताओं का समय–समय पर मार्ग–दर्शन करती रहती हैं। अनेक राजनेताओं ने इस खाप के चबूतरे पर माथा टेक कर अपनी राजनैतिक यात्रा शुरू की है।

महम चौबीसी का चबूतरा ''हिंदू–मुस्लिम'' एकता का प्रतीक भी रहा है। यहां पर मुस्लमान शहीदों की याद में नमाज पढ़ते है तो, '' हिंदू भजन–कीर्तन'' करते थे। लेकिन समय के साथ–साथ चबूतरा सर्वखाप पंचायतों के फैसलों के लिए प्रसिद्ध होता चला गया।

चौबीसी के चबूतरे के इतिहास के बारे में जानकारों के अलग–अलग मत रहे हैं। कुछ इसे मुस्लिमों का चबूतरा मानते थे तो कुछ शहीदी स्थल मानते थे। लेकिन पंजाब विश्वविद्यालय व दिल्ली विश्वविद्यालय के शोधार्थियों द्वारा किए शोधों से शहीदी स्थल होने के प्रमाण मिलते हैं।

चबूतरे पर होने वाले राजनैतिक तथा सामाजिक फैसलें हमेशा चर्चा का विषय रहे हैं ऑनर किलिंग के लिखाफ सबसे पहले यहं पर फैसला लिया गया

था। राजनैतिक अनदेखी के चलते यहां का विकास नहीं हो सकता। कांग्रेस कार्यकाल के दौरान यहां शैड लगाने, हॉल बनाने तथा शौचालय बनाने का वायदा किया गया था। लेकिन दो साल के शासन काल के दौरान कोई काम नहीं हो सका। पिछले साल शैड लगाया गया है। लेकिन अन्य कोई वायदा पूरा नहीं हुआ।

शहर में अनेक ऐतिहासिक स्थल हैं लेकिन सरकारों की अनदेखी के चलते ऐतिहासिक स्थल खंडहर हो रहे है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी देश में पर्यटन को बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। प्रदेश में भी अनेंकों ऐसी धरोहर हैं जिन्हें विश्व पर्यटन पर चमकाया जा सकता है। उनमें से चौबीसी का चबूतरा सबसे महत्वपूर्ण है। चबूतरे के साथ शहीदों की याद जुड़ने के साथ–साथ हिन्दू–मुस्लिम एकता का भी प्रतीक रहा है।

कविता : कविता मेरी पहचान

मोहित
बी.ए. तृतीय वर्ष
रोल नं० 120130002124

काश ! मेरी भी पहचान बन जाए....
शब्दों और लेखनी के मिश्रण से कविता की जुबान बन जाए,
उतरे सबके चित्त मे ऐसे, औरों के होठों की मुस्कान बन जाए।
कविता ऐसी हो, पाठक, पढ़ने को बेचैन हो जाए,
आम जन की पहुँच में हों, ऐसे सरल और सुगम अर्थ बन जाएं
काश ! मेरी कविता,
बेजुबानों की जुबान बन जाए।
काश ! ये कविता ऐसी हो,
पीड़ा एवं वेदनाग्रस्त लोगों के मर्म की दवा बन जाए।
वीर एवं जाबाज सिपाहियों के संघर्ष की गाथा, बेमिसाल बन जाए।
काश ! मेरी कविता उन
संतानहीन बुजुर्गों की, संतान बन जाए।
उनके माथे पर बुढ़ापे की लकीरों की जगह एक आधार स्तंभ बन जाए।
काश ! ये कविता उन बेरोजगारों की समस्या की आवाज बन जाए।
अपने भावों और व्याकरणिक नियमों की पहचान बन जाए।
काश ! ये कविता,
अपने भावों से किसी के जीने की चाह बन जाए।
अपने अनथक पंखों के बल से, वृहत अंबर में उड़ान भर पाए।
काश ! ये कविता, मेरी भी पहचान बन जाए।
काश ! ये कविता, स्वयं की पहचान बना पाए।

आत्मविश्वास

वर्षा सांगवान
बी.ए. प्रथम वर्ष

ये आसमां छीन गया तो क्या ?
नया ढूंढ लेगे,
हम वो परिंदे नही जो
उड़ना छोड़ देंगे !!

मत पूछ, हौंसलें हमारे
आज कितने विशाल हैं,
एक नई शुरूआत, नया
आरंभ तय है....
माना अभी हम निःशब्द है !

ये पारावर छूट गया तो क्या ?
नया सागर ढूंढ लेंगे,
हम वो कश्तियां नहीं जो
तैरना छोड़ देंगे !!

कदम चलते रहेंगे
जब तक श्वास है,
परिस्थिति से परे
स्वयं पर हमें विश्वास है,

एक रास्ता मिला नहीं तो क्या
नई राहे ढूंढ लेंगे,
हम वो मुसाफिर नहीं जो
चलना छोड़ देंगे !!

ख्वाबों को महकता रखते हैं,
हम मंजिलों से वास्ता रखते हैं
नशा हमें हमारी फितरत का
हर हार करती है बुलंद.....
इरादा जीता का !

ये मुकान नहीं हासिल तो क्या ?
नये ठिकाने ढूंढ लेंगे,
हम वो भय नही जो
अपनी तलाश छोड़ देंगे !!

'मेरे पिता'

हर्ष
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष
रोल नं० 1221301015009

कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान है पिता
कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान है पिता
कभी धरती तो कभी आसमान है पिता
अगर जन्म दिया है माँ ने,
तो जानेगा जग जिस से वो पहचान है पिता।
कभी कंधे पर बिठाकर मेला दिखाता है पिता
कभी बनके घोड़ा घुमाता है पिता
माँ अगर पैरों पे चलना सिखाती है,
तो पैरों पे खड़ा होना सिखाता है पिता
कभी रोटी तो कभी पानी है पिता
कभी बुढ़ापा तो कभी जवानी है पिता
माँ अगर है मासूम से लोरी है,
तो कभी ना भूल पाऊंगा वो कहानी है पिता
कभी हंसी तो कभी अनुशासन है पिता
कभी मौन तो कभी भाषण है पिता
माँ अगर घर में रसोई है,
तो चलता है घर जिससे वो राशन है पिता
कभी ख्वाब को पूरा करने की जिम्मेदारी है पिता,
कभी आंसुओं में छिपी लाचारी है पिता
माँ अगर बेच सकती है जरूरत पे गहने
तो जो खुद को बेच दें वो व्यापारी है पिता
कभी हंसी और खुशी का मेला है पिता
कभी कितना तन्हा और अकेला है पिता
माँ तो कह देती हैं अपने दिल की बा
सब कुछ समेट के आसमान सा फैला है पिता।
कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान हैं पिता,
कभी अभिमान तो कभी स्वाभिमान हैं पिता.....

हिन्दी

अंजलि
बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल नं० 12213010020129

जिस में न खिलें फूल वो उद्यान नहीं,
तन व्यर्थ है व जिस में रहे प्राण नहीं।
कितना ही कोई तर्क करे, याद रखो,
हिन्दी के बिना हिन्द की पहचान नहीं।।

ज्यों कृष्ण का अनुराग है कालिन्दी से,
नारी का है श्रृंगार सुभग बिन्दी से।
गंगा का हिमालय से जो नाता है अटूट
सम्बन्ध वही हिन्द का हिन्दी से।।

हिन्दी समस्त राष्ट्र की अभिलाषा है,
हिन्दू की, मुसलमान–सिख की आशा है।
कविता कबीर, खुसरो, दशम गुरू की पढ़ो,
हिन्दी जनम से एकता की भाषा है।।

हिन्दी में कला ही नहीं, विज्ञान भी है,
राष्ट्रीय एकता की ये पहचान भी है।
हिन्दी में तुली, सूर या मीरा ही नहीं,
उस में रहीम, जायसी, रसखान भी है।।

चाहत

भावना
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल नं० 1211301002043

बहरों को सुनाना है तो
आवाज को बहुत जोरदार होना होगा,
चाहत है कुछ करने की
तो फिर से आसमान को छूना होगा,
सिने पर जो जख्म है सब फूलों के गुच्छे है
हमें पागल ही रहने दो, हम पागल ही अच्छे है,
देखे है जो ख्वाब इन आँखों से अब उन्हे पूरा करना होगा,
मेहनत कर नेकी मिलेगी और तेरा नाम भी होगा।
चाहत है कुछ करने की तो फिर से आसमान को छूना होगा।

नारी शक्ति

रेनू सिवाच
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
रोल नं० 1211301015009

नारी है जग आधार उसके बिना कुछ भी नहीं
संभव वह है माँ, बहन, बेटी पत्नी और हर रोल में है अनुपम
नारी को सम्मान देना है, हमारा कर्तव्य और फर्ज
उसके सपनों को पूरा करना है हमारा लक्ष्य और मर्ज
नारी को शिक्षा देना है, हमारा पहला कदम उसके
साथ मिलकर चलना है, हमारा सहयोग और संकल्प
नारी को सुरक्षा देना है हमारी प्राथमिकता और धर्म
उसके अधिकारों को मानना है हमारा नियम और कर्म
नारी को स्वतंत्रता देना है, हमारा मूल मंत्र और सिद्धांत
उसके साथ मिलकर उन्नति करना है हमारा उद्देश्य और अभियांत
नारी है शक्ति का प्रतीक उसके बिना कुछ भी नहीं
संभव वह है सृष्टि का अनमोल रत्न और हर रोल में है अनुपम

कविता

मोनिका
बी.ए. द्वितीय वर्ष
रोल नं० 2406

कुछ करना है तो डटकर चल।
थोड़ा दुनियां से हटकर चल।
लीक पर तो भी चल लेते है।
कभी इतिहास को पलटकर चल।।

बिना काम के मुकाम कैसा ?
बिना मेहनत के दाम कैसा ?
जब तक ना हासिल हो मंजिल
तो राह में, आराम कैसा ?

अर्जुन सा, निशाना रख।
मन में, ना कोई बहाना रख।
लक्ष्य सामने है, बस उसी पे अपना ठिकाना रख।।
सोच मत, साकार कर।

अपने कर्मो से प्यार कर।
मिलेगा तेरी मेहनत का फल।
किसी ओर का ना इंतजार कर।।

जो चले थे अकेले उनके पीछे
आज मेले है..... जो करते रहे इंतजार
उनकी जिन्दगी में आज भी झमेले है।।

कोशिश

ज्योति अहलावत
बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल नं० 12201301002075

लहरो से डरकर नौका पार नही होती,
कोशिश करने वालो की कभी हार नही होती।

नन्ही चिटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दिवारों पर सौ बार फिसलती है,
मन का विश्वास रगो में साहस भरता है
चढ़ कर गिरना, गिर कर चढ़ना ना अखरता है।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

डूबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है।
मिलते नहीं सहज ये मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दूगना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करों,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करों
जब तक ना सफल हो, नींद चैन को त्यागों तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भागो तुम,
कुछ किए बिना हि जय–जयकार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

होस्टल लाईफ

निधी
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष
रोल नं० 1211301015021

अलग सी दुनिया है वहां
खुशी हो या गम साथ पूरा है वहां
हमारे अलग ही अवतार है वहां
पढ़ते हुए भी मस्ती होती है वहां
फोन करने की लाईन में लगकर
मम्मा पापा से बात करने का
अलग ही मजा है वहां
कभी लड़ते हैं कभी झगड़ते हैं।
अलग–अलग शहर से होकर एक
घर के होते है वहां
आज भी याद आते है वे यार
जिनमे वहां कभी–कभी हो जाती थी तकरार
बहुत सी गलतियां भी की और बहुत–कुछ सीख भी वहां
एक अलग सी दुनिया है वहां

माँ

कोमल
बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल नं० 1221301002579

सर पर जो हाथ फेरे,
तो हिम्मत मिल जाए–२ ।।
मां एक बात मुस्कुमार दे,
तो जन्नत मिल जाए।

बहुत रोते है मगर दामन हमारा नम नहीं होता
इन आंखों के बरसने का कोई मौसम नहीं होता–२ ।।
मैं अपने दुश्मनों के बीच भी रहती हुँ महफूज
क्योंकि मेरी माँ की दुआओं का असर कम नहीं होता।

''मेरे प्यारे पापा''

रविना
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष
रोल नं० 15002

समझ कुछ नहीं आ रहा किन शब्दों से शुरूआत करूं....
रिश्ते तो बहुत देखे हैं पर रिश्ते की क्या बात करूं.....
जिनके बिना जिंदगी वीरान है....
सफर तन्हा–सा और राह सुनसान है.....
वही मेरी जमीं वही आसमान हैं.....
वही खुदा हैं और मेरे लिए तो वही भगवान हैं.....
एक टाईम पर सब बदल जाते हैं– पर जिनका प्यार कभी नहीं बदलता.....
सभी बोलते हैं मां के ऊपर क्या लिखूं मगर दोस्त
पापा के ऊपर लिखना भी कुछ आसान नहीं होता.....
हर मुश्किल में ढाल बनकर खड़ा हो जाता है.....
अपने परिवार पर दुखों की परछाई आने नहीं देता.....
पता नहीं उस ऊपर वाले ने किस मिट्टी का बनाया है पिता को
खुद का किसी को पता लगने नहीं देता.....
कभी–कभी तो समझ नहीं आता उनको क्या उपहार दूं.....
तोफहे दूं फूलों के या फिर गुलाबों का हार दूं.....
जिंदगी ही उन्हीं से शुरू होती है मेरी तो सोचती हूं–ये जिंदगी ही उन्हीं पर वार दूं.....!

नई शुरूआत

रवि
बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल नं० 1221301002595

तनहा, सुर्ख खामोशियों से भरी,
चुभती सिकती यादों से जुड़ी,
आंसू, उदासी, गरीबी की चादर में लिपटी,
टूटे हुए सपनों को कुरेद कर सताती यह रात,
चलों, उठो, खत्म यह रात करते हैं।
कल जो बीता, बीत गया वह
चलो नई शुरूआत करते है।

गरीबी की मार झेल रहे, भूखी हड्डियाँ अकुलाती हैं,
यह उदासी पँगु व्यवस्था हर पल उन्हें सताती है।
एक माँ के बच्चे की किलकारी तब दबी हुई रह जाती है।
विधवाओं की माँग जब राख से सनी हुई रह जाती है।
जो देखे थे सारे सपने वे सपने ही रह जाते हैं,
सर्द रातों में पूरी रात जब ठिठुर–ठिठुर रह राते है।
क्या कसूर है इनका चलो अब इन्हें आबाद करते हैं।
बहुत हो चुका जुल्म उन पर, खत्म उनकी रात करते हैं।
कल जो बीता, बीत गया वह चलो नई शुरूआत करते हैं।
चलो नई.....

यह वही देश है जहां नारियां पूजी जाती थी,
आदर और सम्मान की दृष्टि से देखी जाती थी।
परंतु अब परिस्थितियां कुछ और ही हो गई हैं,
नारियां अब बेबस, असहाय, लाचार हो गई है।
कल जो बीता, बीत गया वह चलों नई शुरूआत करते हैं।
चलो नई शुरूआत करते हैं।

ठहर गई थी जो कलम,
रूक गई थी जो दास्तान,
थम गया था मन का प्रवाह,
बंद थी विचारों की दुकान।

लौटी–जीवन–शक्ति अब फिर
लेकर नई उमंग, जोश इस बार,
निकलेगा विचारों का काफिला,
शब्दों में फिर एक बार।।

जीवन में जो राह दिखाए,
सही तरह चलना सिखाए।
मात–पिता से पहले आता,
जीवन में सदा आदर पाता।

कभी है शांत, कभी है धीर,
स्वभाव में सदा गंभीर,
मन में दबी रहे ये इच्छा,
काश मैं उस जैसा बन पाता,
जो मेरा शिक्षक कहलाता।

कल जो बीता, बीत गया वह
चलो नई शुरूआत करते हैं।
चलो नई शरूआत करते हैं।

मेरी राह

ज्योति अहलावत
बी.ए. प्रथम वर्ष
रोल नं० 12201301002075

नही मुझे नही चलना...
उन्हीं राहों पर,
जहां सैकड़ो चलें।

नही मैं नही वो नदी जो...
एक ही दिशा से बहे
और हर बार सागर में जा मिले।

मैं बरसूंगी किसी मरूस्थल पर,
बहना है मुझे किसी जर्जर धरा पर,
मत बांधो मुझे नियमों में,
जहां तुम बंधे।

रहने दो मुझे वह मुक्त पंछी...
जिसे अपना गगन है ढूंढना...
जो न किसी के कहने पर उड़े !

नही मुझे डर कुछ खोने का,
ये प्रश्न है मेरे होने का।
बनी बनाई राहों पर चलकर...
कुछ नया क्या मिलेगा ?

ढूंढनी है मुझे नयी राहें,
चाहती हूँ कि मिले कुछ ठोकरें।

व्यर्थ न यह प्रयास होगा,
मृषा सफलता से बेहतर होगा।

कविता

दिक्षा कुमार
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

हम आज भी बच्चे ही है यार बस
मासूमियत थोड़ी कम और समझदारी
थोड़ी ज्यादा हो गई खिलौने थोड़े कम
और सपने थोड़े ज्यादा हो गए
बाते थोड़ी कम और खामोशी थोड़ी
ज्यादा हो गई गुरूर थोड़ा कम और
शीलता थोड़ी ज्यादा हो गई

हम आज भी बच्चे ही है यार
गुस्सा उतनी ही है बस छुपाना सीख
लिया प्यार इतना ही है बस उस को
थामना सीख लिया नाराजगी होती ही है
बस माफी देना सीख लिया हिम्मत
उतनी ही है बस उसको दबाना सीख लिया।

हम आज भी बच्चे ही हैं यार बस
टूटे खिलौने नहीं टूटे सपने है
रूठे पराए नहीं रूठे तो अपने है
ना जाते हैं ना ही मानते हैं बस यू
ही हमें सतातें।

हम आज भी बच्चे ही हैं यार
बस माता पिता के आंचल से निकलना
लड़ना आ गया एक ही दुआ कृष्णा
से है मांगते उनके चेहरे हमेशा रहे
यूं ही मुस्कुराते।

प्रकृति के नियम

सोनिया ढाका
बी.कॉम. तृतीय वर्ष
रोल नं० 120130003001

प्रकृति का पहला नियम :–

यदि खेत में बीज न डालें
जाएं, तो कुदरत उसके घास–फूस
से भर देती है !! ठीक उसी तरह
से दिमाग में सकारात्मक विचार न
भरे जाएँ, तो नकारात्मक विचार
अपनी जगह बना ही लेती है !!

प्रकृति का दूसरा नियम :–

जिसके पास जो होता हैं,
वह वही बांटता है !!

- सुखी सुख बांटता है !!
- दुःखी दुःख बांटता है !!
- ज्ञानी ज्ञान बांटता है !!
- भ्रमित भ्रम बांटता है !!
- भयभीत भय बांटता है !!

प्रकृति का तीसरा नियम :–

आपको जीवन में जो
भी मिले, उसे पहचाना
सीखो क्योंकि

- भोजन न पचने पर, रोग बढ़ते है !!
- पैसा न पचने पर, दिखावा बढ़ता है !!
- बात न पचने पर, चुगली बढ़ती है !!
- प्रशंसा न पचने पर, अहंकार बढ़ता है !!

BIRDIE' S MORNING SONG

RAVI
B.A. 1st Year
Roll No. 1221301002595

Wake up, little darling
the bridies are out,
And here you are sill in your nest!
The laziest birdie is hopping about;
You ought to be up with the rest.
Wake up, little darling, wake up !

On See what you miss when you
Slumber so long
The dewdrops, the beautiful sky !
I can not sing half what you lose in my song ;
And get, not a word in reply.
Wake up, little darling, wake up !

G've sung myself quite out of patience with you,
While mother bends o'er your
dear head; now birdie has
done all that birdie can do :
Her kissess will wake you instead !
wake up, little darling, wake up !

EARTH DAY

CHIRAG
B.Sc. 1st Year
Roll No. 1221301015006

I am the Earth
And the Earth is me.
Each Blade of grass,
Each honey tree,
Each bit of mud,
And stick and stone
Is blood and muscle
Skin and bone.

And just as I
Need every bit
of me to make
My body fit,
So Earth needs,
Grass and stone and tree
And things that grow here
Naturally.
That's we celebrate this day.
That's why across
The world we say
As long as life
As dear, as free
I am the Earth
And the Earth is me.

STUDENT LIFE

SONIA
B.Sc. IInd Year
Roll No. 1211301015005

Student life is one of the most memorable phase of a person's life. The phase of student life builds the foundation of our life.

Essence of student life

Student life is meant to help us learn discipline and study. Inspire of that, life is quite enjoyable the struggle is low instruments life.

One must get up early in the morning to get ready for school. Simiarly, rushing to bus stop is very execiting during student life the mother constantly reminds us to hurry up and not be late. In addition, there are other exciting moments in students life. We sometimes forgot to compete our homework and then pretend to find the notebook. When teacher ask for it. One of the most exciting thing about student life is getting to go on picnics and trips with friends. Even offer Exams, Waiting for result with friends become fun.

The Essence of Student life lies in things like getting curies about your friends marks getting, jealus if they score more.

POPULATION : BOON OR BONE

VARTESH
B.Sc. IInd Year
Roll No. 1211301015015

"The power of population is Indefinitely greater than the power in the earth to produce subsistence for man".

Population as Boon :

- Great manpower
- Big consumer market
- Great opportunities for investment and profitability
- Intensive forming
- Regularly Rejuvenate work force.

Population as Bone :

- Scarcity of resources
- High rate of Poneety and employment
- Low per capita income
- Congested cities with high rate of street crimes
- Environmental degradation like deforestation, pollution, global worming

Actual reason of Problem :

- Low GDP rate (low level of capital investment, lock of spills and knowledge, more rural population, government structural and policy issues)
- Government's inability to utilize
- Lock of proper social and structural policies.

Conclusion :

- Decision about family choice : Social choice rather than economic one
- Today's children tomorrow workers.
- Can be asset only if properly feed and educated.

GROWING POPULATION : BOON OR BONE

VARTESH
B.Sc. IInd Year
Roll No. 1211301015015

- India is most populous country with a population of 142.8 Crore.

Implication of population growth

Ø India is not growing uniformly the latest National Family Health survey (NFHS) indicates that the Total Fertility Rate (TFR) varies significantly across various wealth quintiles :-

- The poorest wealth quintile has TFR of 3.2 children per woman.
- The 2nd lowest wealth quintile has TFR of 2.5 children per woman.
- The Richest wealth quintile has TFR of 1.5 children per woman.

This shows that population growth is more concent rated in economically weaker section of society.

Ø Population growth acts as a hurdle in addressing effectively the problem of poverty, hunger and malnutrition, also in providing the better quality of health and education.

Ø Presently, India is producing around 25 million job seekers, however the country is able to provide job only to 7 million this gap of 18 million is increasing burden of unemployment and under employment turning a demographic divident into a demographic disaster.

- India's population growth is not sustainable - India is only

about 35-40% of china's landmass. India does not have another landmass to occupy & the available landmass cannot take this population growth.

Impact due to population enplosion / Bane

- Unemployment
- High cost of living
- Poverty
- Illiteracy
- Over use of non-renewable resources
- Exacerbates global warming
- Starvation

Challenges

- India's real challenge is quality of life 21% of 60+ population is suffering from one or other chronic morbidities & India is 2nd highest in term of dementia and alzheimers. That's why there is need of strong social protection schemes.
- Is containing population a solution?

Containing population has its own set of problems.

- It is becoming very expensive for poor & even the middle class to have more than one child or 2 children.
- India still has high Maternal mortality rate and child mortality rate (among poorest especially).

Population as Boon

- Population growth provide us with a more no. of working population
- More scope for innovation, inventions and creative genius
- Economies of scale from higher population
- Enables specialisation
- Increase human capital

Way forward

- India needs to invest more in health sector

- India needs to focus on areas which are socially, culturally, economically depressed.
- India needs to give huge stress on declining sex ration & the discrimination towards girls so that people don't have a high no. of children in hope of having a boy.
- It is important to see issue of population growth not only from national perspective but also from state's point of view i.e. different states need to be encouraged to take necessary step for containing the population.
- India can achieve no. of SDG (Sustainable Development Goos). If it links them with family planning. Family planning is promotive & Promotive & Preventive method for bringing down maternal and chid mortality.

Conclusion

Overpopulation may lead to issues like depletion of natural resources, environment pollution & degradation and loss of surroundings. "Unplanned growth will only result in chaos". Our country must take immediate step to control and manage human population.

SPIRITUAL FULFILLMENT IN MODERN LIFE

DIYA
B.Sc. IInd Year
Roll No. 1211301015020

People all over the world are searching for the solution to the mysteries of life and death.

The demand of modern in the development of our spiritual, intellectual and physical aspects.

Society as a whole values intellectual and physical growth.

Unfortunately, it doesn't place a high value on spiritual development.

In the past, people would leave their homes and their families to search for god. But with the advent of industrial age, and now the technological and information age, more and more demand are paced upon us. Today, it's not practical for people to leave the world to pursue spirituality.

The challenge i would like to address is : How can we pursue spiritual goals in a way that is socially acceptable and socially responsible? How can we attain a spiritual heights without sacrificing intellectual and physical growth?

Spiritual development is a process by which we attain self knowledge and god-realization. We have a physical body a mind and a soul. Spiritual growth involves the realization that our true seif or being is the soul, not the body and the mind.

The great philosophers of ancient greek exhorted us to do so with the words.

'Man, know Thyself'

If we investigate the various methods used throughout the history, we will find that the most effective way to realize ourself is through the process of meditation. Meditation is an ancient wellness practice that focuses on training awareness, attention and compassion. In meditation, we withdraw our attention from the outside world and the physical body our experiencing physical well being. During meditation our body is relaxed and we are from stress and tension. Meditation helps us to reduce stress and experience inner piece and joy.

We are able to face the inevitable problems of life with calmer, more tranquil attitude. We see our worldly difficulties from new perspective. We gain so much inner support and strength that when we pass through the trials and tribulations of life we don't experience their pinching effects.

A natural by product of our spiritual growth is that we become more efficient and productive in our places of work. We are able to produce more in less.

Their is more sublime aspects of meditation which has untold benefits in our lives. We develop love for all.

Peace and harmony will entre our hearts. The more we perfect our meditations, the more we will come in contact with source of divine love and the more we will love and be loved.

WOMEN EMPOWERMENT

-: Wind of Change :-

RITU
B.Sc. IInd Year
Roll No. 1211301015016

'Empower means' : Gives someone the authority or power to do something that brings change in society. We living in a world where women prove their worth. This is an age of women empowerment. Women over the world are working shoulder to shoulder with men.

Women empowerment in the truest sense, will be achieved only when there is attitudinal change in society with regard womenfolk, treaking then with propose respect, dignity fairness and equality. The rural areas of the country are steeped in a feudal and medieval outlook, refusing to grant women equal say in the matters of their education marriage, dress-code, profession and social interactions.

Necessity of Women's Empowerment :-

- Without women' s empowerment, we cannot remove injustice and gender inequality.
- If women are not empowered, they cannot feel safe and confident in society.
- Empowerment acts as a powerful tool against exploitation and harassment of women.

  For instance child marriage, rape and domestic violence can be controlled by women empowerment.

What our constitutions say :-

Various constitutional and legal rights to help women lead a respectfull and meaningfull life. Following are some of these laws to empower women :

- Equal Remuneration Act-1976
- Dowary prohibition Act-1961
- Immoral Traffic (Prevention) Act-19
- Medical termination of pregnancy Act-1971
- Maternity Benefits Act-1961
- Commission of sati (Prevention) Act-1987
- Prohibition of child marriage Act-2006
- Sexual Harassment of women at work place (Prevention, protection) Act-2013
- Juvenile Justice Bill - 2015

Conclusion :-

If we really want to bring about women empowerment in the true sense, there is a crying need for the elimination of the male superiority and patriarchal mindset. Also women need to be given equal opportunities for education and employment with any sense of discrimination. Lets help to making the world a better place.

INDIA IS EMERGED AS A GLOBAL LEADER

MANITA
B.Sc. IIIrd Year
Roll No. 58

Azadi ka Amrit Mahotsav was celebrated @ 75 years of independence of progressive India. A largest and growing population and fastest growing nation while world Recession and vision developed country by 2047.

Today, topic on peace building, reconciliation assuring in the era of no WAR taking pride in India's history in one of the Panch Pran given by the Prime Minister in the age of Amritkol looking back at history it is proof that has always been a harbinger of Peace no WAR does not mean that we have no reason to fight war it only means that we give importance to peace by following value of COMPASSION and FORGIVENESS.

This year's theme for the world India not only practices but also practices 'Vasudhaiva Kutumbakam (One Earth • One Family • One Future).

In India's G-20 presidency we advocate for a multilateral word in which no one country dominates another country when china dominated indo- Pacific region India rushed to help and support ASEAN countries. When Turkiya Syria were hit by deadly earthquakes India rushed for their aid it showed our Brotherhood.

The conflicts in west Asia Africa an constant quest for world dominance between USA and china are doing not good for sustainable and equitable development and during Covid-19 western countries holded vaccines and India that is Bharat who vaccinated entire country but also millions of vaccines to all nearly

countries such as south korea, clatar, Bahrain, Morocco at free of cost and it this circumstance the peaceful negotiation and conculiation in the midset of Russion and Ukraine war as the voice of Global South and the world looks at AYUSH for a healthy lifestyle.

And India and other countries step towards de-dollarization i.e. Reducing reliance on the US Dollar. Due to US massive power to influence other countries economies/ impose sanctions as a tool to achieve foreign policy goals. and printing more money for stobizing economy.

RBI unveiled rupee settlement system for international trade by allowing special vostro accont (internationalizing rupee).

Recently, Prime Minister Modi, went to popua New guinea after attending the G-7 Summit.

The purpose of FIPIC forum enhance and strengthen trade, investment, people to people exchanges and promote blue economy.

Serval western countries enters island for stragic purpose and join military exercises to course they also play a humanitarian role during, any king of natural Diaster, where India play significant role in development and economy.

"Where there is righteousness in the heart, there is beauty in the character. When there is beauty in the character, there is harmony in home. When there is harmony in the home, there is order in the nation. When there is order in the nation, there in peace in the world"

.....A.P.J. Abdul Kalam

ESSAY ON EDUCATION

HIMANSHI
B.Sc. 1st Year
Roll No. 08

1. Education is the process of gaining knowledge and learning skills.
2. Education is among the fundamental rights of humans.
3. Education helps in the development of the nation.
4. Education is important to maintain a good social status.
5. Through education we can get the high-paying jobs.
6. Education is the biggest weapon to achieve sucess.

YOU CAN

SURAJ
B.Sc. 2nd Year
Roll No. 1211301015003

If you think you're beaten, you are.....
If you think you dare not, you don't.....
If you like to win..... but thin you con't.....
It's almost a cinch, You Won't !!
If you think you'll lose, you're lost.....
For out in the world you'll find.....
Success begins with a fellow's will.....
It's all in a state of mind.
If you think you're outclassed, you are.....
You've got to think high to rise.....
You've got to be sure of yourself before.....
You can ever win the prize.
Life's battles don't always go.....
To the stronger or faster man.....
But sooner or after the one who wins.....
IS THE ONE WHO THINKS HE CAN !!

A STORY OF A GIRL CHILD

Tamanna
B.A. 1st Year
Roll. No. 1221301002470

When she was born, there was no celebration, even there was a negative situation. Everyone was in sorrow and in tension. Just because she was a girl child, don't you think this attitude wild.

They don't love her. they don't even care
at the same time pampering her brother. Isn't this is unfair ??
but she know very well life is a game. and she was a very good player.
She was ready to accept. each and every dare.

She was hopeful that. She will be successful someday.
She will definitely achieve the goal.
It might be difficult but she'll find a way.
I just want their love. She always pray.
She was practicing a lot. night and day.

She is also a chid of god, She is a boon.
At that time they denied, but going to accept it soon.

She worked hard and finaly she succeeded .
She took her step forward and never preceeded.
Last she achieved her goals, a mom, a sister, a wife, she plays many important roles.

Now proudly saying I am a girl child,
a story of a girl child....

महाविद्यालय पत्रिका ''चबूतरा'' स्वामित्व आदि का विवरण

फार्म नं० 4

नियम - 4

1.	प्रकाशन	:	महम
2.	प्रकाशन अवधि	:	वार्षिक
3.	मुद्रक का नाम	:	महम प्रिंटिंग प्रेस
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	गोहाना मोड़, महम (रोहतक)
4.	प्रकाशक	:	डॉ० सन्तोष हुड्डा
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	प्राचार्या-राजकीय महाविद्यालय, महम
5.	सम्पादिका	:	श्रीमती पिंकी रानी
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	राजकीय महाविद्यालय, महम
6.	स्वामित्व	:	प्राचार्या-राजकीय महाविद्यालय, महम

मैं डॉ० सन्तोष हुड्डा घोषणा करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी के अनुसार ठीक व सही है।

डॉ० सन्तोष हुड्डा
प्रकाशक-चबूतरा

Essay Writing Competition
GPS Map
Camera Lite

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता (2022-2023)

राजनैतिक शास्त्र

COLOUR'S NAM
RED
YELLOW
BROWN
BLUE
ORANGE
GREEN
WHITE
PINK
BLACK

GPS Map
Camera Lite

राजकीय महाविद्यालय में हुई प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में टीम डी विजयी

महम, 17 अप्रैल (इंदु दहिया): राजकीय महाविद्यालय महम के हिंदी विभाग द्वारा सोमवार को महाविद्यालय परिसर में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में सात टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का संचालन विभागाध्यक्ष पिंकी रानी के निर्देशन में डॉ. बबीता, सविता व डॉ. दिनेश ने किया। डॉ. बबीता व पिंकी ने प्रश्न पूछे। सविता ने स्कोरबोर्ड को संभाला। निर्णायक मंडल की भूमिका संस्कृत विभागाध्यक्ष ममता व हिंदी विभाग से डॉ. दिनेश कुमार ने निभाई। सभी टीमों ने अच्छा प्रदर्शन किया। टीम डी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। टीम सी ने द्वितीय व टीम ई ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विभागाध्यक्ष पिंकी ने विजेताओं को बधाई दी तथा कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं विद्यार्थीयों के ज्ञान तथा व्यक्तित्व विकास के लिए अत्यंत उपयोगी होती हैं।

ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में प्रतिभा की कमी नहीं : डॉ. दहिया

* मंजीत तथा मुस्कान बने श्रेष्ठ स्वयं सेवक * राजकीय महाविद्यालय का एनएसएस शिविर सम्पन्न

महम, 30 मार्च (इंदु दहिया): गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के उपनिदेशक (जनसंपर्क) डॉ. बिजेंद्र विजय दहिया ने कहा कि प्रयास केवल सफलता चाहने के लिए नही, सफलता पाने तक किए जाने चाहिएं। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में भी प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। फर्क केवल सही समय पर सही मार्गदर्शन मिलने तथा प्रतिभा को उचित मंच मिलने का रह जाता है। डॉ. दहिया गुरुवार को राजकीय महाविद्यालय महम के सात दिवसीय एनएसएस शिविर के समापन समारोह में बतौर मुख्यातिथि स्वयंसेवकों को संबोधित कर रहे थे। पूर्व प्राचार्य एवं अधिवक्ता कर्मबीर सिंह समापन समारोह के विशिष्ट अतिथि थे। अध्यक्षता महाविद्यालय के एनएसएस प्रभारी अनिल चहल तथा पिंकी रानी की।

मुख्यातिथि डॉ. दहिया को सम्मानित करते हुए आयोजक व (दाएं) श्रेष्ठ टीम को सम्मानित करते हुए मुख्यातिथि तथा विशिष्ट अतिथि।

डॉ. दहिया ने अपने महाविद्यालय काल के अनुभवों को सांझा करते हुए स्वयंसेवकों से कहा कि बदलते परिवेश में युवाओं की प्राथमिकताएं भी बदल रही हैं। भविष्य के निर्माण के क्षेत्र भी बढ़े हैं। ऐसे में जरूरत है अपनी क्षमता को समझकर मौकों का लाभ उठाने की। उन्होंने कहा कि कोई भी काम छोटा या बड़ा नही होता। काम की गुणवत्ता उसे छोटा या बड़ा बनाती है। कर्मबीर सिंह ने भी कहा कि कार्य की श्रेष्ठता ही कार्य पहचान है। अपनी प्रतिभा के अनुसार कार्य अपनाएं, सफलता अवश्य मिलेगी।

अनिल चहल तथा पिंकी रानी ने शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा स्वयंसेवकों से कहा कि वे शिविर के दौरान आए महानुभावों के विचारों को अपने जीवन में भी धारण करें। अनिल चहल तथा पिंकी रानी ने बताया कि शिविर के दौरान कार्यों के आधार पर बीकॉम अंतिम वर्ष की मुस्कान को लड़कियों के वर्ग में तथा बीए अंतिम वर्ष के मंजीत को लड़कों के वर्ग में श्रेष्ठ स्वयंसेवक घोषित किया गया। बीएसी द्वितीय वर्ष की शकुंतला तथा बीएसी तृतीय वर्ष के अमन को श्रेष्ठ कैम्पर चुना गया। बीए द्वितीय वर्ष की तन्नू तथा बीए अंतिम वर्ष के दीपक को श्रेष्ठ मेहनती स्वयंसेवक घोषित किया गया जबकि अनुशासन श्रेणी में बीए प्रथम वर्ष की पारुल तथा बीए अंतिम वर्ष के साहिल तथा हर्ष श्रेष्ठ रहे। बीकॉम अंतिम वर्ष की शुभी तथा बीए अंतिम वर्ष के विनोद को श्रेष्ठ ग्रुप लीडर घोषित किया गया। लड़कों के वर्ग में ग्रुप ई तथा लड़कियों के वर्ग में ग्रुप डी श्रेष्ठ रहे। गुरुवार की सुबह स्वयंसेवकों ने 'बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ' अभियान के तहत रैली भी निकाली। समापन समारोह के अवसर पर स्वयंसेवकों ने मोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। एनएसएस शिविर गांव खेड़ी में आयोजित किया गया था। समापन समारोह महाविद्यालय के सभागार में हुआ।

की जयंती मनाई जाएगी। शिव मंदिर कमेटी के प्रधान जयभगवान लाकड़ा ने बताया कि सैन भगत महाराज की जयंती मनाई जाएगी। जिसमें सैन धर्मशाला में सुबह नौ बजे हवन यज्ञ किया जाएगा। (जासं)

पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ की ओर से गेंदबाजी करते हुए रमीजा, अस्मिता ने एक-एक खिलाड़ी को आउट किया। इसके जवाब में पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ की टीम 20 ओवर में छह विकेट के

जालंधर
बीच में
बल्लेबा
नौ विके
बनाए।
ने 15

विज्ञान प्रदर्शनी में सूरज और किरण को मिला तीसरा स्थान

महम में राजकीय कालेज में साइंस एग्जीबिशन प्रतियोगिता में तीसरा स्थान मिलने पर सम्मानित करते प्राचार्य आशा मलिक। • जागरण

संवाद सहयोगी, महम : जीसीएम सांपला द्वारा आयोजित साइंस एग्जीबिशन में राजकीय महाविद्यालय महम के मनोविज्ञान विभाग के छात्र सूरज और छात्रा किरण को तीसरा स्थान मिला। 30 नवंबर को सांपला में आयोजित इंटर डिस्टिक साइंस एग्जीबिशन प्रतियोगिता में छात्र एवं छात्रा ने इंटरनेट एडिक्शन से होने वाले दुष्प्रभाव एवं उनसे बचने वाले मनोवैज्ञानिक तरीके को माडल के द्वारा प्रस्तुत किया। विद्यार्थियों ने यह माडल मनोविज्ञान विभागाध्यक्ष वर्षा रानी की देखरेख में तैयार किया।

मा

जागरण
कालेज
क्लब द्व
गया। प्र
ने कहा
की गति
एवं
हिस्सा
के वि
ने एड्स
छात्रों
में जा
विद्यार्थि
से संबं
पोस्टर
आयोज
को ला
सजाक

संस्कृत प्रश्नोत्तरी में गंगोत्री, सपना, रेनू व मनोज की टीम अव्वल

महम कॉलेज में हुई संस्कृत प्रश्नोत्तरी की विजेता छात्राओं को पुरस्कृत करते हुए स्टाफ सदस्य।

महम, 19 अप्रैल (प्रीत): महम के राजकीय महाविद्यालय में हुई संस्कृत विषय की लघु प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।

प्रतियोगिता में विशेष रूप से भगवद गीता, अभिज्ञान शाकुंतलम् और रघुवंश पर आधारित रहा। कार्यक्रम का संचालन संस्कृत विभाग की अध्यक्ष ममता द्वारा किया गया। जबकि प्रतियोगिता में 5 टीमों ने भाग लिया।

अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान तृतीय वर्ष की गंगोत्री और प्रथम वर्ष की सपना ने प्राप्त किया। जबकि रेनू व मनोज की टीम ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। निर्णायक मंडल में हिंदी विभाग की ओर से पिंकी व बबीता शामिल रहीं।

कार्यक्रम के अंत में पिंकी ने विजेता छात्रों को देते हुए बताया कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास में सहायक सिद्ध होती है। इन प्रतियोगिताओं का आयोजन महाविद्यालय के वातावरण को शिक्षा व छात्र प्रगति के अनुकूल बनाता है। इन प्रतियोगिताओं का आयोजन जहां हमारे प्राचीन साहित्य के ज्ञान को परखने के लिए किया जाता है।

वहीं यह हमारे आत्मविश्वास को भी बढ़ाती है। अत: प्राचीन ज्ञान के विकास में सहायक सिद्ध होती है। गीता और रघुवंश प्राचीन भारतीय समाज के आदर्शों और सिद्धांतों का प्रतीक है। यह न केवल विद्यार्थियों को मानव जीवन के मूल्यों के बारे में शिक्षा देते हैं, बल्कि संपूर्ण आधुनिक समाज को संतुलित रहने की सीख भी सिखाते हैं। इस मौके पर स्कूल के कई अन्य स्टाफ सदस्य एवं प्रतिभागी मौजूद थे।

Editorial Staff

STAFF EDITOR : (Left To Right) Mrs. Savita (Hindi Department), Dr. Sarita (English Department) Mrs. Pinki Rani (Chief Editor), Dr. Santosh Hooda (Principal), Mrs. Jyoti Sharma (Economics Department) Dr. Dinesh (Hindi Department), Mr. Vipin (Commerce Department)

STUDENT EDITOR : (Left To Right) Divakar (Sanskrit Department), Bhawna (Economics Department) Vinod Kumar (Sanskrit Department), Mohit Kumar (Hindi Department), Ravi Kumar (English Department)

TEAM OF NECK AND IQAC

NON TEACHING STAFF

Meham Printing Press, Meham